3. १००८ श्री संभवनाथ जी

यक्ष
त्रिमुख

चिन्ह
घोड़ा

वर्ण
पीतवर्ण

यक्षिणी
प्रज्ञप्ति

अर्घ

जल चन्दन तन्दुल प्रसून चरु, दीप धूप फल अर्घ किया।
तुमकों अरपों भाव भगति धर, जै जै जै शिव रमनि पिया॥
सम्भव जिनके चरन चरचते, मन आकुलता मिट जावे।
निज निधि ज्ञान दरश सुख बीरज, निराबाध भवि जन पावे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन शुक्ला-८

गर्भकल्याणक

कार्तिक शुक्ला-१५

जन्मकल्याणक

मार्गशीर्ष शुक्ला-१५

तपकल्याणक

कार्तिक कृष्णा-४

केवलज्ञान कल्याणक

पिता: श्री द्वदरथ राजा
माता: सुसेना देवी

मोक्ष स्थान श्री सम्मेदशिखर जी

चैत्र शुक्ला-६

मोक्षकल्याणक